Namak Swadanusar (Hindi)

Nikhil Sachan

नमक स्वादानुसार

निखिल सचान

हिन्द युग्म
hindyugm.com

ISBN: 978-93-81394-50-2

प्रकाशक:
हिन्द-युग्म
1, जिया सराय, हौज खास, नई दिल्ली-110016
मो.– 9873734046, 9968755908

कला-निर्देशन: विजेंद्र एस विज | www.vijendrasvij.com

पहला संस्करण: अगस्त 2013
पहली आवृत्ति: फरवरी 2014
दूसरी आवृत्ति: नवम्बर 2014
तीसरी आवृत्ति: जून 2015
चौथी आवृत्ति: दिसम्बर 2015

© निखिल सचान

Namak Swadanusar
(A collection of stories by Nikhil Sachan)
nikhil.sachan1986@gmail.com

Published By
Hind Yugm
1, Jia Sarai, Hauz Khas, New Delhi– 110016
Mob: 9873734046, 9968755908
Email: sampadak@hindyugm.com
Website: www.hindyugm.com

First Edition: Aug 2013
First Reprint: Feb 2014
Second Reprint: Nov 2014
Third Reprint: June 2015
Fourth Reprint: Dec 2015

माँ, पापा, दीदी और शुभांगी के लिए

बात की बात

'नमक स्वादानुसार' मेरी पहली क़िताब है। इसकी कहानियाँ ज़हन में उसी तरह आई हैं, जिस तरह देह को बुख़ार आता है। ये पन्नों पर जैसे-जैसे उतरती गईं, बुख़ार भी उतरता रहा। ये कहानियाँ 'बस हो गयी' हैं, और अब आपके सामने हैं। इसमें से एक-एक कहानी को मैंने सालों-साल, अपने दिमाग़ के एक कोने में, तंदूर पर चढ़ाकर, धीमी आँच पर बड़ी तबियत से पकाया है क्योंकि मैं कहानियों के मामले में निहायती-लालची इंसान हूँ।

ये कहानियाँ मुझे उत्साहित भी करती हैं और नर्वस भी। उत्साहित इसलिए, क्योंकि एक क़िताब के रूप में ढलकर ये कहानियाँ वैसे ही 'मुक़म्मल' हो जाएँगी, जैसे अंडों से निकलकर चूजे 'मुक़म्मल' हो जाते हैं। इन कहानियों के पास पंख तो थे, लेकिन परवाज़ को बुलंद होने के लिए नीले शामियाने की ज़रूरत हुआ करती है।

नर्वस इसलिए कह लीजिए क्योंकि आज की तारीख़ में 'लिटरेचर' और 'इंटरटेनमेंट' के बीच का फ़र्क़ बस धागे भर का रह गया है। अब अगर ये कहूँ कि मैं लोगों की प्रतिक्रिया से परे हूँ तो मेरी बात में एक चुटकी झूठ झाँकता मिलेगा।

इस क़िताब के लिए मुझे कुछ ख़ास लोगों का शुक्रिया भी अदा करना है, जिनके बगैर ये क़िताब, 'क़िताब' की शक़्ल नहीं ले पाती। शुभांगी ने हमेशा मेरी कल्पना में और मुझमें, गाहे-बगाहे, चटकीले रंग भरे हैं। अगर मेरी कहानियाँ पढ़ कर उसे ख़ुशी होती थी, तो मैं समझ लेता था कि मेरी क़लम को, उसकी नीली पीठ पर, हौले से शाबाशी महसूस हुई होगी। संजू दादा हमेशा मेरी लिखावट के लिए बहुत बड़ी ताक़त रहे हैं। वो जब भी कहते थे कि 'निखिल मेरा फ़ेवरेट ऑथर है', तो मेरी छाती गुब्बारे-सी फूल जाती थी।

मेरे अज़ीज़ दोस्त- वैभव, सुमित, पुष्पेंद्र, आदर्श, मृदुल और मनुज ने बिना नागा किए, लगभग मेरी सारी कहानियाँ पढ़कर उन पर नुक्ताचीनी की है और मेरा हौसला बढ़ाया है। सुमन दा को भी शुक्रिया कहना चाहता हूँ क्योंकि अगर मैं उनसे नहीं मिला होता तो शायद कहानियों, नाटक और फ़िल्मों को उस नज़रिए, तड़प और बारीकी से नहीं देख पाता जैसे आज देखता हूँ।

माँ, पापा और दीदी का शुक्रिया! क्योंकि मैं जो भी हूँ, मेरे एक-एक ज़र्रे के होने-न-होने की बहुत बड़ी वजह वही हैं।

आख़िर में आप सभी का शुक्रिया, जो इस क़िताब को अपने घर तक ले आए। उम्मीद करता हूँ कि यह क़िताब आपकी ज़िंदगी में, कुछ देर को ही सही, सोंधा-सा छौंका ज़रूर लगा देगी।

कुछ कम-ज़्यादा हो जाए तो, नमक स्वादानुसार आप ख़ुद ही मिला लीजिएगा।

(आख़िर में अपनी तरफ़ से एक छोटा-सा डिस्क्लेमर भी कहता चलूँ। इस संकलन के सभी

पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। इसमें से एक कहानी, सुहागरात- ‘उर्फ़ प्रोफ़ेसर’ नाम की फ़िल्म से हल्की-फुल्की प्रभावित कही जा सकती है, और टोपाज़ का आइडिया सुमित सक्सेना की शॉर्ट फिल्म ‘गुड्डू’ से उपजा है।)

निखिल सचान

पता-ठिकाना

परवाज़

हीरो

मुग़ालते

पीली पेंसिल

टोपाज़

साफ़े वाला साफ़ा लाया

सुहागरात

विद्रोह

बाजरे का रोटला, टट्टी और गन्ने की ठूँठ

परवाज़

अजूबा, गया प्रसाद और सुपर कमांडो ध्रुव

नानू के लिए ये वाला संडे अच्छा भी गया था और बुरा भी। बुरा इस लिहाज़ से कह लीजिए, कि अजूबा, नानू की जगह, सुबू से मिलने आया था। अजूबा! बहारिस्तान का रखवाला! 'ख़ुदा गवाह' फ़िल्म वाला अजूबा! वैसे तो, सुबू, नानू का सबसे अच्छा दोस्त था, लेकिन ये बात नानू की समझ से बाहर थी कि अजूबा उससे मिलने क्यों नहीं आया?

सुबू ने बताया कि अजूबा काले कपड़े में सफ़ेद घोड़े पर आया था। सुबू की तो साँस ही अटक गयी थी। फिर भी सुबू डरा नहीं और दोनों की बातचीत हुई।

दोनों पहाड़ी पर गए और सुबू ने अजूबा को किला दिखाया। स्कूल भी दिखाया। उसने वो घर भी दिखाया जो नानू और सुबू ने चितकबरे पिल्ले के लिए बनाया था। नानू को इस बात से रोमांच भी हुआ कि अजूबा उसका बनाया हुआ घर देख कर ख़ुश हुआ होगा, लेकिन कहीं-न-कहीं उसको ये भी लग रहा था कि सुबू ने अजूबा को ये बात बताई भी होगी या नहीं, कि टाट और मिट्टी से मज़बूत घर बनाने की तरक़ीब नानू ने ही भिड़ाई थी। अगर उसने ऐसा बताया होता तो शायद कभी अजूबा उससे भी मिलने आ जाता। अजूबा भी कमज़ोरों का दोस्त था और नानू भी। उसे भी जानवर पसंद थे और अजूबा को भी। जैसे अजूबा घोड़े को अपना भाई बोलता था, वैसे ही नानू चितकबरे पिल्ले को अपना भाई कहता था।

सुबू ने अजूबा को बबूल का वो पेड़ भी दिखाया जिस पर पेशाब करने से गया प्रसाद को जिन्न चढ़ गया था। सुबू ने अजूबा को बताया कि उस दिन के बाद से गया प्रसाद रोज़ाना अपने दरवाज़े से, बबूल के पेड़ तक, लोटते-लोटते जाता है और जिन्न के सामने उठक-बैठक करता है। उसकी ज़िंदगी इस क्रम के गोल-चक्कर में फँस गई है और वो गोल चक्कर तभी टूटेगा जब बारिश से बबूल के पेड़ का एक-एक काँटा धुल कर फिर से साफ़ हो जाएगा।

लेकिन इधर बीच तीन महीने से बारिश नहीं हुई थी और बादलों का मिजाज़ भी कुछ ठीक नहीं लग रहा था।

सबकुछ अच्छा चल रहा था कि अचानक सुबू की बचकानी बातों से अजूबा की हँसी छूट गई। सुबू का माथा ठनक गया। ठनकने वाली बात थी भी।

गया प्रसाद वाली बात सुबू और नानू के सिवा किसी और को पता नहीं थी। एक तो सुबू ने भरोसा करके, बिना 'बाई-गॉड' की क़सम खिलाए, अजूबा को इतनी ख़ुफ़िया बात बताई और अजूबा उसकी बात को 'लंतरानी' समझ कर हँसने लगा। दोनों के बीच बहुत लड़ाई हुई, कभी ये भारी तो कभी वो भारी। ऐसा लगता था कि इस बात का नतीजा निकलेगा ही नहीं कि